पाठ–9

रेल यात्रा

मूल पाठः–

हमारी रेल सभी मामलों में काफी प्रगति कर रही है। मुंबई से दिल्ली तक यह प्रगति कुछ ज्यादा दिखती है। लेकिन अगली ही पंक्ति में लेखक इस भ्रम को दूर कर देता है और आगे कहता है, ''अब देखिए न, प्रगति की राह में रोड़े कहाँ नहीं आते। राजनीतिक पार्टियों के रास्ते में आते हैं, देश के रास्ते में आते हैं, तो यह तो बेचारी रेल है।'' रेक के बहाने पूरे पाठ में सरकार के आचरा पर व्यंग्य किया गया है। अक्सर राजनीतिक पार्टियाँ व राजनेता प्रगति की झूठी तस्वीर पेश करती है। अगर प्रगति दिखती भी है तो कुछ एक जगहों पर जैसे–दिल्ली, मुंबई।

भारतीय रेल के प्रारंभिक विवरण के बाद कथा आगे बढ़ती है। उद्घोषण के शब्द 'ईश्वर आपकी यात्रा सफल करें' के साथ की शुरूआत होती है। यहाँ कहने का तात्पर्य है ईश्वर आपको भारतीय रेल को कष्ट झेलने की शक्ति प्रदान करें। क्योंकि आगे आपको अनेक समस्याओं से जूझना है। समस्याओं की शुरूआत टिकट कटाने से होती है, फिर चढ़ने से लेकर बर्थ मिलने तक यह बरकरार रहती है। आप अपनी ताकत, मनोबल का प्रयोग कर आरामदेह यात्रा कर सकते हैं। यहाँ रेल के बहाने भारतीय राजनीति में प्रवेश की स्थिति को दर्शाया गया है। जहाँ ताकत, पैरवी, जाति आदि प्रवेश के मानक तय हैं। जिस तरह शराफत दिखाकर, लाईन में लगकर आप टिकट कटाने से चढ़ने तक अपनी बारी का इंतजार करते हैं, और अन्त में निराशा हाथ लगती है। ठीक वही स्थिति आज समाज के सभ्य व्यक्तियों के साथ है। वे राजनीति के साफ तौर–तरीकों में बदलाव का इंतजार करते रह जाते हैं, और उनका इंतजार कभी न खत्म होने वाली प्रक्रिया बन जाती है।

भारतीय रेल हमें जीना सीखाती है। जो चढ़ गया उसकी जगह, जो बैठ गया उसकी सीट जो लेट गया उसकी बर्थ। जिसमें दम, उसके हम। आपने समाचार पत्रों में पढ़ा होगा कि मंत्री बनते ही वे अपनी

सुख– सुविधा हेतु पहले आओ, पहले पाओ की राह पर चल पड़ते हैं। यहाँ राजनीति पर घोर कटाक्ष है। इस बात का स्पष्ट संकेत है कि व्यवस्था नाम की कोई चीज नहीं है जो चीज लाभदायक है उसपर सभी अपनी दावेदारी जताते हैं। जिसमें जितना दम होगा उसकी पहुँच उतनी दूर तक होगी।

अगर आप यह सब कर सकते हैं, तो आप अपने राज्य के मुख्यमंत्री भी हो सकते हैं। यह संवाद आज की राजनीति पर तीखा प्रहार है। अक्सर आपने सुना होगा कि पैसे व ताकत के बल पर विधायकों व सांसदों की खरीद–फरोख्त होती है और किसी एक पार्टी की सरकार बन जाती है। लोकतंत्र के मुँह पर यह जोरदार तमाचा है।

भारतीयों रेलों ने एक बात सिद्ध कर दी है कि बड़े आराम की मंजिलें छोटे आराम से तय होती हैं और बड़ी पीड़ा के सामने छोटी पीड़ा नगण्य है। आप लाख तैयारीयाँ कर लें, लेकिन रेल यात्रा आपकी यादगार नहीं हो सकती है। इसके तीन उदाहरण हैं– पहला उदाहरण ससुराल की यात्रा से हैं, दूसरा अपने चहेते की मृत्यु से है और तीसरा होनेवाली पत्नी से मुलाकात का है। तीनों तरह की स्थितियों में तमाम मुश्किलों के बाबजूद आपको गंतव्य तक पहुँचना ही है। दूसरे उदाहरण में शादी को बड़ी पीड़ा कहते हैं क्योंकि जिंदगी भर के लिए मुसीबत जो उठानी है।

भारतीय रेल चिंतन के विकास में बड़ा योगदान देती है। जैसे जीवन की अंतिम यात्रा में मनुष्य खाली हाथ रहता है। जिस तरह रेलों में खड़े रहने की जगह नहीं मिलती, जहाँ तक निहारिये वहाँ तक सिर ही सिर नजर आते हैं। जनसंख्या वृद्धि पर एक तीखी प्रतिक्रिया है। वोट की राजनीति के चलते राजनेता कोई ठोस कदम इस दिशा में नहीं उठाते। जीवन की अंतिम यात्रा में मनुष्य खाली हाथ रहता है। इसका उद्देश्य यह है कि ये रेलयात्रा आपकी अंतिम यात्रा न साबित हो जाये क्योंकि भारतीय रेल की सुरक्षा पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता है।

भारतीय रेल हमें मृत्यु का दर्शन समझाती है और अक्सर पटरी से उरकर उसकी महत्ता का भी अनुभव करा देती है। कोई नहीं कह सकता कि रेल में चढ़ने के बाद वह कहाँ उतरेगा? अस्पताल में या

शमशान में। यह कथन रेलवे अर्थात प्रशासन की लचर–पचर व्यवस्था और अदूरदर्शिता की ओर ध्यान खींचता है।

रेल की दूर्दशा के बहाने देश की व्यवस्था पर गहरा प्रहार है। जिस तरह रेल बिना प्लेटफार्म के जहाँ–तहाँ रूक जाती है जब चाहती है चल पड़ती है। उसी तरह देश की प्रगति भी अनियमित और अव्यवस्थित तरीके से चल रही है। जिस तरह रेल अपने मूड पर चलती है, ठीक उसी तरह देश भी राजनेताओं के मूड पर चलता है।

भारतीय रेल कहीं न कहीं हमारे मन को छूती है। वह मनुष्य को मनुष्य के करीब लाती है। एक ऊँघता हुआ यात्री दूसरे ऊँघते हुए यात्री के कंधे पर टिकने लगता है। यहाँ व्यंग्य जनसंख्या–नियंत्रण के किसी भी ठोस आधारभूत संरचना के निर्माण न होने से है। हर जगह भीड़ ही भीड़ है, कुव्यवस्था अपना पाँव जमा चुकी है, नैतिकता का घोर अभाव है। जीवन में आदर्श अपना महत्त्व खो चुका है। एकान्तप्रियता का कोई स्थान नहीं।

भारतीय रेल आगे बढ़ रही हैं। भारतीय मनुष्य आगे बढ़ रहा है। हमें सोचने को मजबूर कर रहा है कि क्या सचमुच में यह प्रगति है। हम प्रगति का मुखौटा कब तक अपने ऊपर लादे रहेंगे। अगर सचमुच में यह प्रगति है तो योजना बनाकर हमें उसे क्रियान्वित करना सीखना होगा। अनुश्रवण व अनुसमर्थन व्यवस्था को काफी मजबूत करना होगा। जनसंख्या नियंत्रण की ठोस व्यवस्था विकसित करनी होगी। अन्यथा निबन्धकार की जो चिंता है। आगे–आगे मनुष्य बढ़ रहा है, पीछे–पीछे रेल आ रही है। अगर इसी तरह रेल पीछे आती रही, तो भारतीय मनुष्य के पास सिवाय बढ़ते रहने के कोई रास्ता नहीं रहेगा। अन्त में निबन्ध का यह संदेश जबतक एक्सीडेंट न हो, हमें जागते रहना है, एक गंभीर इशारा है।

शरद जोशी